दिव्य लीलामृत

एकांत में उनका आनंद आस्वादन

SGD

SGD

"आपको हृदय की गहराई से कीर्तन गाना चाहिए। केवल एक औपचरिकता पूरी करने के लिए या शीघ्रता से समाप्त करने के भाव से कीर्तन गाने से वास्तविक कीर्तन नहीं होता है।"

श्रीलगुरुदेव

SGD

श्रीगुरु-गौरांगौ जयतः

श्रील गुरुदेव की एकांत में रहने की तीव्र अभिलाषा का मुझे पहली बार तभी अनुभव हुआ जब 2011 की श्रीव्रजमण्डल परिक्रमा का समय निकट आ रहा था। उन दिनों कोलकाता में रहते समय, वे चाहते थे कि हम उन्हें एकांत में ही छोड़ दें। चूँकि उन्होंने परिक्रमा के समय गोवर्धन में रुकने का निर्णय कर लिया था, इसलिए वे बार-बार वहाँ पहुँचने

में बचे दिनों की संख्या गणना करते रहते थे। कोलकाता में उनके लिए एक-एक दिन बिताना अत्यंत कठिन होता जा रहा था। उनकी गोवर्धन में रहने की तीव्र लालसा को वर्णन करने के लिए जागतिक शब्द पर्याप्त नहीं है।

उन दिनों में, हमने श्रील गुरुदेव को गोवर्धन, राधाकुंड और श्यामकुंड की महिमा बार-बार वर्णन करते हुए देखा और सुना भी। दिन में कई बार वे

महाजनों द्वारा रचित स्व-अभीष्ट-लालसामयी या विरहात्मक गीतियाँ, जैसे कि "राधा कुंड तट कुंज कुटीर", "कोथाई गो प्रेममयी राधे राधे", "राधा भजने यदि मति नाहि भेला" आदि एकांत में गाया करते थे। कभी-कभी वे हमारी उपस्थिति में भी उन कीर्तनों को गाते थे। वे कीर्तन गाते समय पूर्ण रूप से उसमें मग्न हो जाते थे। ऐसे में उनके कमल-नयन अश्रुओं से भर जाते और कंठ रुद्ध हो जाता। जब उस अवस्था

में उनके लिए कीर्तन गाना और संभव नहीं हो पाता, तब वे हमें कीर्तन गाने के लिए कहते। साथ-साथ वे हमें यह भी कहते, "आपको हृदय की गहराई से कीर्तन गाना चाहिए। केवल एक औपचारिकता पूरी करने के लिए या शीघ्रता से समाप्त करने के भाव से कीर्तन गाने से वास्तविक कीर्तन नहीं होता है। कीर्तन के अर्थ को समझते हुए ध्यान से उसे गाना चाहिए। भजन के प्रत्येक अंग का पालन, हृदय से करना चाहिए।"

अंततः अक्टूबर 2011 में श्रील गुरुदेव का गोवर्धन में शुभ-आगमन हुआ। वहाँ पहुँचकर उनके आनंद की कोई सीमा नहीं रही। किसी-किसी दिन वे धाम के दिव्य स्थानों के दर्शन के लिए जाते थे। किन्तु अधिकतर दिन और समय वे स्वयं को गोवर्धन में स्थित अपनी भजन कुटीर में ही सीमित रखते थे। एक दिन पंजाब के कुछ भक्तों ने श्रील गुरुदेव से अनुरोध किया, "गुरुजी! आप अधिकतर

समय अपनी कुटीर में ही रहते हैं, बाहर नहीं आते हैं। यह आपके स्वास्थ्य के लिए ठीक नहीं होगा। आप बाहर धूप में आकर क्यों नहीं बैठते? धूप में बैठना आपके स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होगा। आपके बाहर आने से हम आपको किसी भी प्रकार की कोई बाधा नहीं देंगे। अतः आपके श्रीचरणों में हमारी विनम्र प्रार्थना है कि कृपया आप प्रत्येक दिन बाहर आकर थोड़ी देर धूप में बैठें।"

श्रील गुरुदेव, उन भक्तों

पर स्नेहपूर्ण दृष्टि डालते हुए मंद-स्मित के साथ, मृदु स्वर से एक महत्वपूर्ण शिक्षा देने लगें, “क्या आपने श्रीचैतन्य चरितामृत का अध्ययन किया है? क्या आपने श्रीचैतन्य महाप्रभु की लीलाओं पर ध्यान दिया है? वे एक छोटे से कमरे (गम्भीरा) की चार दीवारों के बीच 12 वर्षों तक एकांत में रहे। उस प्रकार की उनकी लीला में उनके एक या दो अंतरंग पार्षदों को ही प्रवेश मिलता था। आपको श्रीचैतन्य चरितामृत का अध्ययन

करना चाहिए।"

श्रील गुरुदेव ने भक्तों को, उनके स्वास्थ्य की चिंता से मुक्त करने के लिए कदाचित एक साधारण भाव से यह बात बोल दी। किन्तु इससे मुझे पहली बार यह स्पष्ट संकेत मिला कि महाप्रभु ने गम्भीरा में जिस रस का आस्वादन किया, श्रील गुरुदेव भी कदाचित वैसे ही रस का आस्वादन कर रहे हैं। पहले भी कुछ महीनों से मैं देख रहा था कि वे अपने कमरे से बाहर

निकलना नहीं चाहते थे; वे चाहते थे कि उन्हें एकांत में ही छोड़ दिया जाए। अब इस घटना के बाद मुझे उनके भीतर क्या चल रहा था, उसकी एक झलक मिली।

वर्ष 2012 में एक और विशेष घटना हुई, जो मेरे हृदय

पर अंकित हो गई। एक दिन दोपहर को श्रील गुरुदेव कोलकाता में अपनी भजन कुटीर में आराम कुर्सी पर बैठकर उच्च स्वर से हरिनाम का जाप कर रहे थे। वे लगभग 15-20 मिनट तक उच्च स्वर से जाप करते रहे। अचानक से, हरिनाम का उच्चारण बंद हो गया, उनकी आँखें बंद हो गईं, शरीर के अंग शिथिल हो गए और उनका मुख खुला रह गया। लंबे समय तक उनके शरीर में कोई गतिविधि नहीं थी। वे हमारे सामने होते हुए

भी हम सबसे बहुत दूर किसी और ही स्थान पर पहुँच चुके थे।

उस समय हमें अनुभव हो रहा था कि संभवत: श्रील गुरुदेव हरिनाम में पूर्ण रुप से डूब गए हैं। किन्तु जब हमने उन्हें लंबे समय तक अचल अवस्था में देखा, तो हम अधीर होने लगें। उनकी श्वास चल रही है कि नहीं यह जानने के लिए हमने एक पतला सूती-कपड़ा उनकी नाक के सामने रखा। कपड़ा थोड़ा भी नहीं हिला। किम् कर्तव्य विमूढ़ (क्या

करना होगा, इससे अनभिज्ञ) होकर घबराहट में हम उनकी उस अवस्था को भंग करने का प्रयास करने लगे। पहले हमने उन्हें 'गुरु महाराज! गुरु महाराज !' कहते हुए पुकारा। किन्तु जब हमें उनसे कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली, तो हमने उनके शरीर को स्पर्श कर उसे धीरे से हिलाया। अंत में उन्होंने बहुत कठिनाई से धीरे-धीरे अपनी आँखें खोली। उनका शरीर अचानक स्तंभित हो गया। वे लम्बे समय तक मौन ही रहे।

वे समाधि अवस्था से धीरे-धीरे बाह्यावस्था में आने लगे। यह सोचकर कि हमने उनकी समाधि-स्थिति में बाधा पहुँचाई, हमें बहुत दु:ख हुआ था।

Play Store

SrilaGurudeva

SGD